Title: Need to build a monument at Rahnat village in Haryana in memory of the freedom fighters.

श्री सुरेन्द्र सिंह (भिवानी): उपाध्यक्ष महोदय, यद्यपि हम स्वतंत्रात की स्वर्ण जयंती मना चुके हैं, तथापि हमने भिवानी जिले के रोहनात गांव के शहीदों के बलिदान को अभी तक पूरी तरह से मान्यता नहीं दी है। रोहनात गांव हांसी से १२ किलोमीटर दूर बसा हुआ है। इस गांव के बहादुरों ने हिसार के नागरिकों के साथ मई, १८५७ की क्रान्ति में अंग्रेजों के खिलाफ साहसिक बगावत करने में अग्रणी भूमिका निभाई थी।

रोहनात के नज़दीकी गांवों- जमालपुर, हजामेपुर, भाटोल रांगड़ान, खरड अलीपुर मंगाली, पुट्ठी मंगलखां इत्यादि से असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों की एक प्लॉटून ने २९ मई, १८५७ को तोशाम, हांसी तथा हिसार के अंग्रेज शासकों पर धावा बोला और परिणामस्वरूप खजाने को लूटा तथा देशभक्त कैदियों को रिहा करवा लिया। इस संघर्ष में हिसार के १२ तथा हांसी के ११ अंग्रेज अधिकारियों को मौत के घाट उतार दिया गया। जब १८५७ का विद्रोह नाकाम हो गया तो इन क्रान्तिकारियों को उसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी। रोहनात गांव को अंग्रेजी फौज ने चारों तरफ से घेरकर पहले बमबारी करवाई और उसके बाद घरों तथा उसके आसपास के गांवो को आग लगा दी जिसमें सैंकड़ों लोग जीवित जल गये। हांसी में क्रान्तिकारियों को अंग्रेज सिपाहियों ने पकड़कर सड़क पर लिटाकर उन्हें रोड रोलर के नीचे कुचलवाया। हांसी की इस खूनी सड़क को आज भी लाल सड़क के नाम से पुकारा जाता है। इसके अतिरिक्त रोड रोलर के नीचे कुचले गये असंख्य अज्ञात शहीदों में रोहनात गांव का एक बहादुर नवयुवक नोंदा भी शामिल था। इसी प्रकार बिरद दास स्वामी को तोप के मुंह के आगे बांधकर उड़ा दिया गया। रोहनात गांव की कम्पूर्ण २० हजार बीघा से अधिक भूमि को अंग्रेज शासकों द्वारा जब्त करके नीलाम कर दिया गया। इस एक कदम से रोहनात गांव के सभी ग्रामवासी भूमिहीन हो गये।

वर्ष १९७० में हरियाणा सरकार द्वारा इस गांव के स्वतंत्रता सेनानियों के २५ वंशजों को मात्र १,२५,०० रुपये की सांकेतिक धनराशि प्रदान की गई थी। राष्ट्र द्वारा शहीद स्मारक के रूप में इनकी शौर्य गाथा को पूर्ण मान्यता देनी अभी बाकी है। राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिये इस गांव में इन महान क्रान्तिकारियों के सर्वोच्च बलिदान को अविस्मरणीय बनाने के लिये एक भव्य स्मारक का निर्माण करना यथोवित होगा।